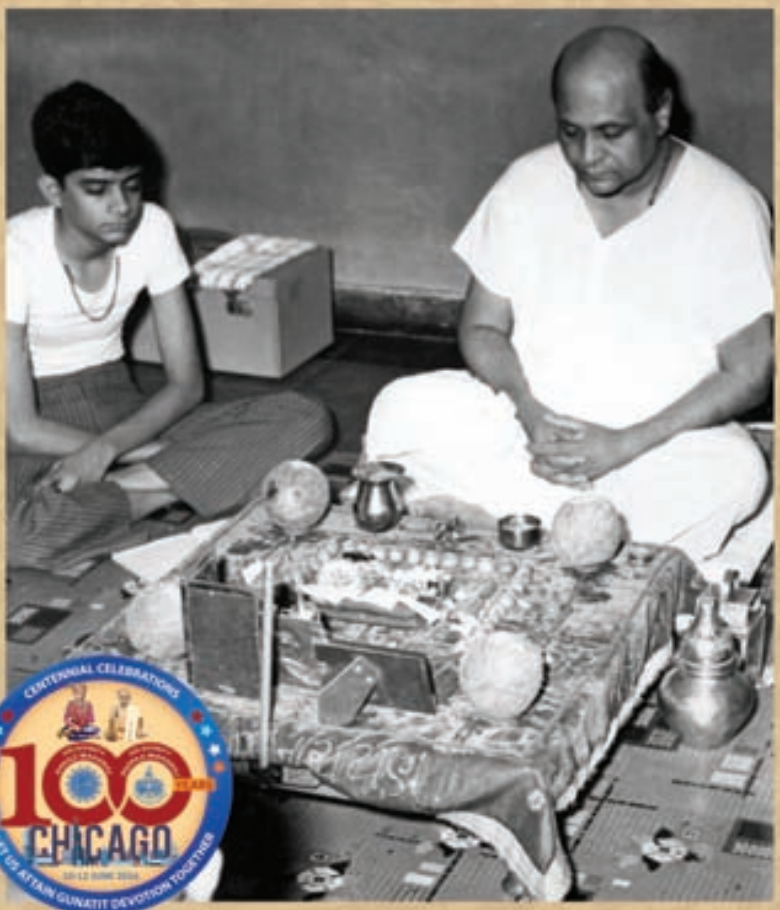
CENTENNIAL CELEBRATIONS
100
YEARS
CHICAGO
LET US ATTAIN GUNATIT DEVOTION TOGETHER

अथ महापूजातिधि :

अथ महापूजाविधिः

Guruhari Kakaji - Guruhari Pappaji
'Bandhu Beladi Shatabdi Mahotsav' Publication

अथ महापूजाविधिः

© **Publisher :**
YOGI DIVINE SOCIETY
2437 North Yeoman Street
Waukegan, IL 60087, USA
(847) 336-6451
Website : http://www.kakaji.org
E-mail : info@kakaji.org

Available at :
YOGI DIVINE SOCIETY
6/D, Sonawala Bldg.,
Tardeo, Mumbai - 400 007
INDIA
(022) 2380 2527

YOGI DIVINE SOCIETY
International Spiritual Research Centre
'Akshardham', Swaminarayan Mandir,
Near Hiranandani Hospital,
Powai, Mumbai - 400 076
INDIA
(022) 2578 2151

YOGI DIVINE SOCIETY
Shree Aksharpurushottam Swaminarayan Mandir,
Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar III, Delhi - 110 052
INDIA
(011) 4709 1281

Copies : 1000

Price : US $ 1

प्रस्तावना

।। स्वामिश्रीजी ।।

जय स्वामिनारायण।

जैसा माहात्म्य प्राचीन वैदिक काल में यज्ञ का था, ऐसा ही माहात्म्य इस काल में महापूजा का है और महापूजा की विधि को यज्ञविधि समान ही महत्त्व दिया जाता है। यह एक आध्यात्मिक टेक्नोलॉजी है।

स्वामिनारायण संप्रदाय में **महापूजा विधि** का सर्वप्रथम प्रयोग सद्गुरु गोपाळानंदस्वामी ने श्रीहरि के स्वधामगमन के बाद किया था। सांप्रदायिक इतिहास में बताया गया है कि श्रीहरि जब स्वधाम गये तब उनके अपार विरह में दु:खी दादा खाचर को सांत्वना देने सद्. गोपाळानंदस्वामी ने संवत 1886, जेठ शुक्ल एकादशी के दिन गढ़पुर में गोपीनाथ देव समक्ष महापूजा कराई थी और स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए थे।

महापूजा का विधिवत् प्रारंभ कराने का श्रेय अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी को दिया जाता है। वि.सं. 1901 में गोपाळानंदस्वामी जूनागढ़ पधारे तब गुणातीतानंदस्वामी ने उनसे कहा कि सोरठ देश के सत्संगीयों के देशकाल अच्छे हो, उनके दु:ख-दारिद्र्य दूर हो इस लिये आप महापूजा कराइए। वैदिक विधि में विद्वान और समर्थ गोपाळानंदस्वामी खुद कोई कोई प्रसंग पर महापूजा करते थे। उस महापूजा का यंत्रपटल बिछाकर, उसके उपर सर्वावतारी परमात्मा भगवान स्वामिनारायण और मुक्तों का स्थापन करके उन्होंने महापूजा का विधि दिखाया। महापूजा का वह यंत्रपटल और श्रीहरि ने उनको पूजा के लिये दिये हुए शालिग्राम उन्होंने जूनागढ़ मंदिर को अर्पण कर दिये। जिसका दर्शन हम आज भी जूनागढ़ मंदिर में कर सकते हैं।

उस यंत्रपटल पर अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी ने सद्. गोपाळानंद स्वामी की उपस्थिति में ही विद्वान ब्रह्मचारी वासुदेवानंदस्वामी के पास वि.सं. 1901, जेठ शुक्ल एकादशी से महापूजा का मंगल प्रारंभ कराया। उसके बाद अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी की आज्ञा से उनके शिष्य और वासुदेवानंद ब्रह्मचारी के अनुगामी विद्ववर्य ब्रह्मचारी अचित्यानंद ब्रह्मचारी ने नित्य इस सेवा का दायित्व सँभाला।

ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज ने ब्र.स्व. योगीजी महाराज के पास अक्षर

मंदिर, गोंडल में महापूजा का प्रारंभ करवाया। योगीजी महाराज ने शास्त्रीजी महाराज से कहा कि, 'मुझे महापूजा आती नहीं' तो शास्त्रीजी महाराज ने कहा, 'मैं सिखाता हूँ, कुछ कम-ज्यादा बोल दे तो कोई हर्जा नहीं, बड़ों के शब्द झील ले तो आ जाता है, प्रयत्न जारी रखना।'

गुरुहरि ब्र.स्व.प.पू. काकाजी और गुरुहरि ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी की निश्रा में सभी भक्तों के श्रेय की भावना को व्यापक बनाने, विघ्नों को दूर करने, सब के स्वास्थ्य, संपत्ति, मन की शांति एवम् आत्मा की उन्नति की भावना को सर्वत्र फैलाने के मंगल हेतु से **'तारदेव' मंदिर में महापूजा** का मंगल प्रारंभ हुआ था। **वह शुभ दिन था 8 अगस्त, 1964.** इस धन्य अवसर की सुवर्ण जयंती पूरे गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में गत **2014** की साल में अत्यंत भक्तिभावपूर्वक समूह महापूजा के आयोजन से मनाई गई।

सन् 1964 से 1966 मई महिने तक पू. हंसादीदी ने तारदेव मंदिर में महापूजा की। जून 1966 में जब सभी संतबहने विद्यानगर रहने गई तो प.पू. काकाजी की आज्ञा से प्रथम पू. राजुभाई भट्ट, पू. राजुभाई ठक्कर और सन् 1973 से पू. वशीभाई ने नियमित रुप से इस महापूजा का विधि चालु रखा। 2003 में पवई मंदिर के निर्माण के बाद वही महापूजा आज पर्यन्त बड़े उत्साह और भक्ति से पवई मंदिर में होती है। गुणातीत समाज के अन्य अनेक केन्द्रो में भी कई सालों से आज भी संतो, संतभाईयों और बहने सभी हरिभक्तों के सर्वांगी श्रेय के लिये हररोज सुबह नियमित रुप से महापूजा करते हैं। इसके अलावा हर साल श्रावण मास में भी सभी हरिभक्तो अपने परिवार के श्रेय के लिये संतो और संतभाईयों, बहनों के पास विशिष्ट महापूजा करवाते है। संतो और मुक्तो द्वारा नि:स्वार्थ भाव से की हुई महापूजा अवश्य फलदायी होती है। पहले कोई विशिष्ट अवसर पर बड़े-बड़े समूह यज्ञ होते थे, लेकिन गुरुहरि काकाजी ने सांप्रत समय के संजोग को ध्यान में रखकर सभी को सानुकूल हो ऐसी समूह महापूजा की प्रणाली का प्रारंभ उनके प्रागट्य महोत्सव के अवसर पर सन् 1985 में मुंबई में प्रेमपुरी आश्रम में करवाया। तब से आज पर्यन्त पवई के संतभाईयो हरएक विशिष्ट अवसर पर समूह महापूजा द्वारा भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों को अपनी श्रद्धा और भक्ति का अर्ध्य देते हैं।

दीप प्रागट्य -

सब भक्तों को प्रार्थना है आप दीप प्रगटाये।

जय स्वामिनारायण।

अथ महापूजाविधिः

अथ मंगलाचरणम् -

अभी हम ठाकोरजी का, सभी गुणातीत स्वरुपों का और ज्योतिर्धरों का आवाहन करके, हाथ जोड़के प्रार्थना करेंगे।

पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ (२)
गुना करीने माफ अमारा, गुना करीने माफ...
पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ...

१) प्रणाम छे धर्मतातने रे, भक्तिमाताने प्रणाम (२)
प्रणाम छे ज्येष्ठ भ्रातने रे (२), इच्छारामने प्रणाम जी हो...
गुना करीने माफ...
पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ...

२) पति मेल्या पियु तम कारणे, मेली कुळमरजाद (२)
मात-पिता मूक्यां छे स्वामी (२), एक तमारे काज जी हो...
गुना करीने माफ...
पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ...

३) गरुड तजीने पाळा पधार्या, गज सारु महाराज (२)
अेवी रीते तमे आवो दयाळु (२), करवा अमारां काज जी हो...
गुना करीने माफ...
पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ...

४) अम जेवा तमने घणा पण, तमो अमारे एक (२)
प्रेमसखी विनंती करे छे (२), राखो अमारी टेक जी हो...
गुना करीने माफ...
पधारोने, सहजानंदजी हो गुना करीने माफ...

श्लोक

श्रीमत्सद्गुणशालिनं चिदचिदि व्याप्तं च दिव्याकृतिम्
जीवेशाक्षरमुक्तकोटिसुखदम् नैकावताराधिपम्।
ज्ञेयं श्रीपुरुषोत्तमम् मुनिवरै र्वेदादिकीर्त्यम् विभुम्
तं मूलाक्षरयुक्तमेव सहजानंदम् च वंदे सदा।।

महाध्यानाभ्यासं विदधतमजस्त्रं भगवत:।
पवित्रे सम्प्राप्तं स्थितिमतिवरै कान्तिकवृषे।
सदानन्दं सारं परमहरिवार्ताव्यसनिनं।
गुणातीतानंदं मुनिवरमहं नौमि सततम् ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नम:।।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्द माधवम्।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

ब्रह्मानंदं परम सुखदम् केवलम् ज्ञानमूर्तिं
द्वंद्वातीतं गगन-सदृशम् तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी-साक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
योगीराजम् नमामि।।

सर्वोपरी स्वामिनारायण, प्रभु प्रेमे हुं नमुं
निष्काम धर्मने स्थापी दई, तमे मोक्षद्वार खुल्लुं मूक्युं...
अर्पी गुणातीते भगतजी, जागास्वामी ने अदा
ज्वलंत राखी ज्योत श्रीजीनी, भक्तोने सनाथ कीधा...
शास्त्रीमहाराजे अक्षर-पुरुषोत्तम पधराविया
योगीमहाराजे प्रत्यक्ष चैतन्य मंदिरो कीधां...
काकाजी, पप्पाजी द्वारे अखंड रह्या आप प्रभु
बा, बेनना स्वरुपने घडी कार्य कर्युं छे नवुं...

प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, प्रत्यक्ष प्रभुस्वरुप
हरिप्रसाद, अक्षरविहारी, साहेब छे आपस्वरुप...
दिनकरभाई, गुरुजीमां आप छो निहाळीअे
ज्योतिर्धरोना संगथी मळी धन्यता ते माणीअे...
हे नाथ! हुं शीश नामीने कहुं, सहजानंद तुं छे अहींनो अहीं
धर्मवंशने अमर कर्यो प्रत्यक्ष स्वरुपे रही... (२)

घंटी बजाना...

स्वस्ति वाचनम् -

अब सभी यजमान ठाकोरजी को टीका लगाके परस्पर एक-दूसरे को टीका करेंगे और एक-दूसरे को पुष्पहार पहनायेंगे।

हरि: ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवा:, स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु ।।
ॐ भद्रङ्कर्ण्णेभि: श्रृणुयाम देवा, भद्रम् पश्येमाक्षभि र्यजत्रा: ।
स्थिरैरङ्गैस तुष्टुवागुँसस्तनू, भि र्व्यशेमहि देव हितय्यँदायु: ।।

घंटी बजाना...

कंकणबन्धनम् -

यजमान एक-दूसरे को नाड़ाछड़ी बांधेंगे।
मंचस्थ स्वरुपों को और संतों को भाईओं नाड़ाछड़ी बांधेंगे।
संतबहनों को बहनें नाड़ाछड़ी बांधेंगी।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:।
तेन त्वाम् अभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।
नमामि सहजानन्दं नित्यं सर्वाऽवतारिणम्।
मूलाऽक्षर - स्वरुपं च गुणातीत - मुनिं मुदा ।।
गुणातीत-मुनिं धाम धामेशं श्रीहरि तथा।
मुक्त-वृन्दं नमस्कृत्य ततो जयमुदीरयेत् ।।

आज सखी आनंदनी हेली (२), हरिमुख जोईने हुं थई छुं रे घेली (२)
आज सखी आनंदनी हेली...

महा रे मुनीना ध्यानमां ना'आवे (२), ते रे शामळियोजी मुजने बोलावे (२)
आज सखी आनंदनी हेली...
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे
ते रे शामळियोजी मुजने रे प्रीछे, ते रे शामळियोजी मुजने रे प्रीछे...
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे...
न गई गंगा गोदावरी काशी (२)
घेर बेठा मळ्या अक्षरवासी, घेर बेठा मळ्या अक्षरवासी...
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे...
तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं
सहेजे सहेजे हुं तो सुखडा रे माणुं, सहेजे सहेजे हुं तो सुखडा रे माणुं...
तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं...
जे'राम कहे स्वामी सहेजे रे मळिया (२), वातनी वाते व्हालो अढळक ढळिया (२)
तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं...
महेर करी मारे मंदिर आव्या
थाळ भरीने मोतीडे वधाव्या, थाळ भरीने मोतीडे वधाव्या...
महेर करी मारे मंदिर आव्या...
आनंद अंग ना माय मारी बेनी (२), हरिवर भेटतां लज्जा रे शानी (२)
महेर करी मारे मंदिर आव्या...
दुरिजन मन रे माने तेम कहेजो
स्वामीजी मारा रुदियामां रहेजो, स्वामीजी मारा रुदियामां रहेजो...
दुरिजन मन रे माने तेम कहेजो...
जे रे जोईऐ ते मागजो मावा (२), त्रिकम तमने हुं नहीं ढऊं जावा (२)
दुरिजन मन रे माने तेम कहेजो...
मुखथी ते झाझुं शुं कही दाखुं
हरिवर मारा रुदियामां राखुं, हरिवर मारा रुदियामां राखुं...
मुखथी ते झाझुं शुं कही दाखुं...
कोण रे पुण्ये हुं हरिवर पामी (२), भले मळिया जे'रामना स्वामी (२)
मुखथी ते झाझुं शुं कही दाखुं...
घंटी बजाना...

चित्तवृत्ति निरोध -

अब हम सभी का पूर्ण ध्यान महापूजा में एक चित्त करने के लिये श्लोक का श्रवण करेंगे।

ब्रह्मानंदं परम सुखदम् केवलम् ज्ञानमूर्तिं
द्वंद्वातीतं गगन-सदृशम् तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी-साक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
योगीराजम् नमामि।।

घंटी बजाना...

आचमनीयम् -

अभी आचमनी में जल लेकर ताम्रपात्र में छोड़ेंगे और श्री ठाकोरजी और सभी गुणातीत स्वरुपों के नाम बोले जाने के बाद एक साथ नमोनम: बोलेंगे।

ॐ श्री सहजानंदस्वामी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री गुणातीतानंदस्वामी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री गोपाळानंदस्वामी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री सर्वेभ्य: परमहंसेभ्यो नमो नम:
ॐ श्री रामचंद्र भगवानने नमो नम:
ॐ श्री कृष्णपरमात्माने नमो नम:
ॐ श्री लक्ष्मीनारायणदेवने नमो नम:
ॐ श्री नरनारायणदेवने नमो नम:
ॐ श्री भगतजी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री जागास्वामी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री कृष्णजी अदा महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री शास्त्रीजी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री योगीजी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री काकाजी महाराजाय नमो नम:
ॐ श्री पप्पाजी महाराजाय नमो नम:

ॐ श्री हरिप्रसादस्वामी महाराजाय नमो नमः
ॐ श्री अक्षरविहारीस्वामी महाराजाय नमो नमः
ॐ श्री जशभाई साहेबने नमो नमः
ॐ श्री सर्व दिव्य प्रत्यक्ष स्वरुपोने नमो नमः
ॐ श्री सर्व संतमंडळने नमो नमः
ॐ श्री सर्व संतभाईओने नमो नमः
ॐ श्री सर्व संतबहनोने नमो नमः
ॐ श्री सर्व एकांतिक भक्तेभ्यो नमो नमः
ॐ श्री गणेशाय नमो नमः
ॐ श्री हनुमंताय नमो नमः
ॐ श्री सर्व तीर्थाय नमो नमः
ॐ श्री इष्टदेवताभ्यो नमो नमः
ॐ स्थानदेवेभ्यो नमो नमः

घंटी बजाना...

प्राणायाम -

अब हम तीन बार श्वास को रोक कर प्राणायाम करेंगे।

पूरा श्वास लो। छाती भरके मस्तक तक, अटको, भावना करो, 'हे महाराज! हे स्वामी! मेरा देह-इन्द्रियाँ शुद्ध हो रही है।' धीरे धीरे श्वास को निकालो, निकालने के टाईम पर भावना करो, 'मेरी इन्द्रियाँ शुद्ध हो रही है।'

फिर से श्वास लो छाती भरके मस्तक तक, अटको, भावना करो, 'हे महाराज! हे स्वामी! मेरा अंतःकरण यानी की मेरा मन, बुद्धि, चित्त, अहम् शुद्ध हो रहे है।' धीरे धीरे श्वास को निकालो, निकालने के टाईम पर भावना करो, 'मेरे अंतःकरण की अशुद्धियाँ दूर हो रही है।'

तीसरी बार सांस लो। छाती भरके मस्तक तक, अटको, भावना करो, 'हे महाराज! हे स्वामी! मेरी चेतना को, मेरे आत्मा को, मेरे बिंग को शुद्ध चैतन्य ब्रह्मस्वरुप एकांतिक तेरा दास बनाना।' धीरे धीरे सांस को निकालो, निकालने के टाईम पर भावना करो, 'मेरी चेतना शुद्ध हो रही है।'

अब हम मुख्य संकल्प करने के लिये सुपात्र हो गये है।

Now you are qualified to do Sankalp.

घंटी बजाना...

प्रधान संकल्पम् -

अब यह महापूजा विधि का मुख्य संकल्प शुरु हो रहा है। सभी यजमान आचमनी में पानी लेकर संकल्प करें। आपको भगवान से जो मांगना है, जो प्रार्थना करनी है वह भाव भगवान के पास रखना है।

(हस्ते जलमादाय)

अथ: संकल्प...

ॐ नम: परमात्मने, श्री स्वामिनारायणपुराणपुरुषोत्तमाय तत्सत्।
अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे, श्री श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे, भूर्लोके जम्बूद्वीपे ब्रह्मावर्तैकदेशे, पुण्यभूमौ अस्मिन् महा शुभ स्थाने, अस्मिन् खंडे ममदेशे, ममनगरे, अधिकविंशतिशततमे... नाम्नि वैक्रमाब्दे, उत्तरे अयने...
अस्मिन ऋतौ विक्रम संवत... अस्मिन मासे...
शुभ पुण्यतिथौ... अस्मिन् वासरे, अस्मिन् दिनांके...
सर्वेषु ग्रहेषु यथायथं, राशिस्थानस्थितितेषु सत्सु भक्तानां नामानि दीयन्ते। साङ्गं सपरिवारं, तत्-तन् नगर-वास्तव्यानां, सर्व नाम्नां भक्तानाम् अत्र उपस्थितानाम् अनुपस्थितानां च सर्वेषां सास्तङ्गिनां साधूनां पार्षदानां साधकानां समस्त गुणातीत - भक्तमंडळानां...

मम तथा च आत्मन:
वेदोक्त - पुराणोक्त - पुण्यफल प्राप्ति अर्थम्
कायिक - वाचिक - मानसिक - कर्मदोष - परिहार अर्थम्
आध्यात्मिक-आधिभौतिक-आधिदैविक - त्रिविध ताप उपशमन अर्थम्
गुरुहरि काकाजी महाराज - गुरुहरि पप्पाजी महाराज बंधुबेलडी शताब्दी महोत्सव निमित्ते
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-फल प्राप्ति अर्थम्
श्री स्वामिनारायण भगवान प्रीति अर्थम्
यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यै:, ध्यानावाहनादिषोडशोपचारै:,

अन्योपचारैश्च साक्षर मुक्तैः सह श्री महापूजा आख्यम्, अहङ् करिष्ये।
बोलो सहजानंदस्वामी महाराजनी जय।

अब आचमनी में रखा हुआ जल ताम्रपात्र में छोड़ दे।

घंटी बजाना...

दिग्रक्षणम् -

अभी बाँये हाथ में अक्षत् रखके उसके उपर दाया हाथ रखें। यहाँ भाव यह है कि अभी हमने संकल्प किया चारो ओर से आते हुए अनिष्ट तत्त्वों से हमारी रक्षा हो, इस भाव से यह विधि करते है।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्-ते नश्यन्तु त्वदाज्ञया ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषाम् अविरोधेन पूजाकर्म समारंभे ।।

अब अक्षत् को चारों दिशा में ड़ाल दें।

घंटी बजाना...

आवाहनम् स्थापनम् च -

अब हम ठाकोरजी, सभी गुणातीत स्वरुपो और ज्योतिर्धरों का आवाहन करके स्थापन करेंगे एवम् आवाहयामि स्थापयामि का उच्चारण करेंगे।

मध्ये श्री सहजानंदस्वामी स्वामिनारायण भगवान आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिण बाहौ श्री गुणातीतानंदस्वामी महाराज आवाहयामि स्थापयामि।
वाम बाहौ श्री गोपाळानंदस्वामी महाराज आवाहयामि स्थापयामि।
उत्तरे श्री प्रागजी भक्त महाराज आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिणे श्री जागाभक्त महाराज, कृष्णजी अदा महाराजम् च आवाहयामि स्थापयामि।
पूर्वे श्री शास्त्रीजी महाराज यज्ञपुरुषदासम् आवाहयामि स्थापयामि।
पश्चिमे श्री योगीजी महाराज ज्ञानजीवनदासम् आवाहयामि स्थापयामि।
नैऋत्ये प्र.ब्र.स्व. काकाजी महाराजम्, पप्पाजी महाराजम् च आवाहयामि स्थापयामि।
प.पू. गोरधनकाका, प.पू. कांतिकाका च आवाहयामि स्थापयामि।

वायव्ये प्र.ब्र.स्व.प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराजम् च आवाहयामि स्थापयामि।
वायव्ये प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामीमहाराज, अक्षरविहारीस्वामीमहाराजम् च आवाहयामि स्थापयामि।
प.पू. कोठारीस्वामीजी, निर्मळस्वामीजी च आवाहयामि स्थापयामि।
सर्वे मोटेरा संतो आवाहयामि स्थापयामि।
समग्र संतमंडळ आवाहयामि स्थापयामि।
अग्नो प्र.ब्र.स्व.प.पू. जशभाई साहेब, हरिभाई साहेब संज्ञो आवाहयामि स्थापयामि।
प.पू. दिनकरभाई साहेब, गुरुजी मुकुंदजीवनस्वामी संज्ञो
आवाहयामि स्थापयामि।
दिव्य संतभाईयो आवाहयामि स्थापयामि।
समग्र संतबहेनो आवाहयामि स्थापयामि।
ईशाने सर्व गुणातीत भक्तमंडळाम् आवाहयामि स्थापयामि।
सर्व तीर्थो आवाहयामि स्थापयामि।
सर्व आचार्य महाराज आवाहयामि स्थापयामि।
श्री रामचंद्र भगवान, श्री कृष्ण परमात्मा च आवाहयामि स्थापयामि।
श्री गणपतिदादा, श्री हनुमानदादा च आवाहयामि स्थापयामि।
सर्वे इष्टदेवता, सर्वे गुरुभ्यो आवाहयामि स्थापयामि।
सर्व देवेभ्यो आवाहयामि स्थापयामि।

घंटी बजाना...

षोडशोपचार पूजनम्

अथ न्यास विधि -

अब आचमनी में जल रखना है।

ॐ अद्भ्य इति उत्तरनारायणसूक्तस्य तथा
ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुष इत्यादि-षोडशर्चात्मकपुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिः। पुरुषोत्तमोदेवता। अनुष्टुप छन्दः। षडङ्गन्यासे (षोडशाङ्गन्यासे च) विनियोगः।

अब आचमनी में रखा हुआ जल ताम्रपात्र में छोड़ दीजिए।
अब हम हाथ जोड़के प्रार्थना करते है।

निजात्मानं ब्रह्मरुपं देहत्रयविलक्षणम्।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा।।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्।।

घंटी बजाना...

कलश पूजनम् -

अभी सभी यजमानों को कलश के कंठ को नाड़ाछड़ी बांधकर, पूजन करके अक्षत् एवम् पुष्प चढ़ाना है।

कलश एक शुभ प्रतीक है। जब देवो और दानवों का युद्ध हुआ तभी समुद्रमंथन में रत्न के रुप में कलश भी निकला था। सभी तीर्थों के प्रतीक समान उसका पूजन किया जाता है। इसी भाव से हम अब कलश का पूजन करेंगे।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु-समाश्रिताः।।
गायत्री चैव सावित्री शान्तिपुष्टिकरी तथा।
आयान्तु महापूजार्थम् दुरितक्षयकारकाः।।
त्वत् तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत्रः कामफलप्रदाः ।।
गंङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

घंटी बजाना...

मार्जनम् -

अब आचमनी में जल रखे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् योगीराज हितं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय नमः। मार्जनम् समर्पयामि।

अब चारो दिशा में जल को छोड़ दो।

घंटी बजाना...

दीप पूजनम् -

अभी आपके सामने रखे हुए दीप का पूजन करके उसके उपर अक्षत् और पुष्प चढ़ाना है।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
संसार-तमसः पाहि नमस्ते ज्योति-रुपिणे।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय नमः। दीपस्थदेवतायै नमः। आवाहयामि। स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि।

घंटी बजाना...

शंखपूजनम् -

शंख विष्णु भगवान का प्रतीक है और जभी ध्रुवजी ने तप करके प्रार्थना करी तो भगवान ने प्रार्थना सुनके ध्रुवजी के गाल के उपर आशीष दिये थे। इसी भाव से अब हम सामने रखे हुए शंख का पूजन करेंगे और उस के उपर अक्षत् और पुष्प चढ़ायेंगे।

शङ्खे चन्द्रार्क-दैवत्यं वरुणम् चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्याद् अग्रे गङ्गा सरस्वती ।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच् शङ्खं प्रपूजयेत् ।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नमः। शङ्खस्थदेवतायै नमः। आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धम् पुष्पम् समर्पयामि। नमस्करोमि।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ।।

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे। पावनाय धीमहि। तन्नो शंखः प्रचोदयात्। गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि।

घंटी बजाना...

घण्टा पूजनम् -

घण्ट गरुडजी का प्रतीक है। घंटनाद करने से रक्षा होती है। अभी आपके सामने रखे हुए घंटी का पूजन करके उस के उपर अक्षत् और पुष्प चढ़ाना हैं।

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टाम् प्रपूजयेत् ।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नमः।
घण्टास्थगरुडायै नमः। आवाहयामि। स्थापयामि।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि।

घंटी बजाना...

ध्यानम् -

अब हम आँख बंद करके ठाकोरजी का ध्यान करेंगे।

तेजोमण्डल-मध्यस्थं कोटि-कन्दर्प-सुन्दरम्।
नवीन-नीरद-श्यामं चिन्तये पुरुषोत्तमम् ।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय नमः। ध्यायामि। ध्यान करो।

ध्यान धर, ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं, जे थकी सर्व संताप नासे... संताप नासे... (२)
कोटि रविचंद्रनी कांति झांखी करे (२)
अेवा तारा उर विशे नाथ भासे... नाथ भासे...
ध्यान धर, ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं, जे थकी सर्व संताप नासे... संताप नासे... (२)
हे... ध्यान धर ध्यान धर...

अंगोअंग पुष्पनां आभरण पहेरीने (२), दास पर महेरनी दृष्टि करतां
कहे छे मुक्तानंद भज दृढ भावशुं,
सुख तणा सिंधु सर्वे कष्ट हरता... सर्वे कष्ट हरता...
ध्यान धर, ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं, जे थकी सर्व संताप नासे... संताप नासे... (२)
कोटि रविचंद्रनी कांति झांखी करे (२) अेवा तारा उर विशे नाथ भासे... नाथ भासे...
ध्यान धर, ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं, जे थकी सर्व संताप नासे... संताप नासे... (२)
हे... ध्यान धर ध्यान धर...

घंटी बजाना...

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ हे नाथ स्वामिनारायण प्रभो।
धर्मसूतो दयासिन्धो स्वेषां श्रेय: परमं कुरु:।।

घंटी बजाना...

आवाहनम् -

अब हाथ जोड़के ठाकोरजी का आवाहन करना है।

आगच्छ भगवन् देवेश स्वस्थानात् परमेश्वरम्।
अहं पूजा करिष्यामि सदा त्वं सम्मुखो भव ।।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्माने नम:। आवाहयामि।

घंटी बजाना...

आसनम् -

अब आपके सामने रखी हुई तीन सुपारी में ठाकोरजी का भाव करके सुपारी को ताम्रपात्र में तुलसीदल के उपर रखना है।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय नम:। आसनं समर्पयामि।
आसनार्थे अक्षतान् तुलसीदलं च समर्पयामि।

घंटी बजाना...

पाद्यम् -

अब हम ठाकोरजी के चरणार्विंद के पूजन की भावना करेंगे।

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व-सौगन्ध्य-संयुतम्।
पाद-प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडलसहिताय पाद्यो: पाद्यं समर्पयामि।।

घंटी बजाना...

स्नानम् -

अब हम ठाकोरजी को शुद्ध जल से स्नान करायेंगे। स्नान की भावना करनी है।

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदा-जलै:।
स्नापितोऽसि मया देव ह्यत: शान्तिं कुरुष्व मे।।

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व-सौगन्ध्य संयुतम्।
स्नानार्थम् मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्माने नम:। स्नानं समर्पयामि।

यमुना जळमां केसर घोळी, स्नान करावुं शामळा
हलके हाथे अंगो चोळी, लाड लडावुं शामळा... (२)
यमुना जळमां केसर घोळी, स्नान करावुं शामळा...

अंगो लूछी आपुं वस्त्रो, पीळुं पीतांबर प्यारमां
तेल सुगंधी नांखी आपुं, वांकडिया तुज वाळमां...
यमुना जळमां केसर घोळी, स्नान करावुं शामळा...

कुमकुम केरुं तिलक सजावुं, त्रिकम तारा भालमां
अलबेली आंखोमां आंजु, अंजन मारा व्हालमा..
यमुना जळमां केसर घोळी, स्नान करावुं शामळा...

घंटी बजाना...

आचमनीयम् -

अब हमें आचमनी में सभी नदीयों का जल का भाव रखकर ठाकोरजी को चढ़ाना है।

सर्व-तीर्थ-समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्माने नम:। आचमनीयम् समर्पयामि।

गंगा-गोदावरी-गोमती-घेलौ-यमुना-कावेरी-सिंधु सभी नदीयों के आवासरुप जल से स्नान कराते है।

घंटी बजाना...

पंचामृत स्नानम् -

अब हमें ठाकोरजी को पंचामृत से स्नान करवाना है।

पयो दधि धृतं चैव मधु च शर्करा तथा।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नमः। पंचामृत स्नानं समर्पयामि ।।
पंचामृत स्नानविधि अंते शुद्धोदकस्नानविधि समर्पयामि।।

घंटी बजाना...

शुद्धोदक स्नानम् -

अब हमें ठाकोरजी को शुद्ध जल से स्नान करवाना है।

नदीनां सरसामेव मयानीतं जलं शुभम्।
गृहाण स्नान-मन्त्रेण प्रभो स्नानीयमुत्तमम्।

ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नमः। शुद्धोदकस्नानविधि समर्पयामि।।

पूर्वनुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे
स्वामिनारायण मळिया रे त्यारे, स्वामिनारायण मळिया रे त्यारे...
पूर्वनुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे...
नेणे मोहनवर नीरख्या ज्यारे (२), पूरणकाम थयुं मारुं त्यारे... (२)
पूर्वनुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे...

प्रेमे करी मंदिर पधराव्या
श्याम सुंदरवर मनडे रे भाव्या, श्याम सुंदरवर मनडे रे भाव्या
प्रेमे करी मंदिर पधराव्या..
नीरखी नारायण मूर्ति ज्यारे (२), त्रिविध ताप टळ्या मारा त्यारे (२)
प्रेमे करी मंदिर पधराव्या...

केसर चंदन चरच्युं छे भाले (२)
हसतां सुंदर खाडा पडे छे गाले, हसतां सुंदर खाडा पडे छे गाले...
केसर चंदन चरच्युं छे भाले...
कानमां कुंडळ मकराकार शोभे (२), जे'राम कहे मन जोई जोई लोभे (२)
केसर चंदन चरच्युं छे भाले...

आज सखी आनंदनी हेली... (२)

घंटी बजाना...

वस्त्रम् -

अब हम ठाकोरजी को वस्त्र के प्रतीकरुप नाड़ाछड़ी अर्पण करते है।

वस्त्र युग्मं गृहाण त्वं सूक्ष्म सूत्र विनिर्मितम्।
सूक्ष्म कार्पास तन्तुभि: सुवर्णेन विराजितम्।।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नम:। वस्त्रोवस्त्रं समर्पयामि।

घंटी बजाना...

यज्ञोपवीतम् -

अब हमें ठाकोरजी को यज्ञोपवीत धारण करवाना है।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:।।
ॐ श्री स्वामिनारायण परमात्मने नम:। यज्ञोपवीत समर्पयामि।

घंटी बजाना...

चंदनम् -

अब हम ठाकोरजी का भाव से चंदन करके पूजन करेंगे।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यगरु-संयुतम्।
कर्पूरेण च संमिश्रं स्वीकुरु च विलेपनम्।
ॐ श्री स्वामिनारायण परमात्माने नम:। चन्दनं समर्पयामि।

श्री वासुदेव विमलाऽमृत-धाम-वासं
नारायणं नरक-तारण-नामधेयम् ।
श्यामं सितं द्विभुजमेव चतुर्भुजं च
त्वां भक्ति-धर्म तनयं शरणं प्रपद्ये ।।

आज सखी आनंदनी हेली (२), हरिमुख जोईने हुं थई छुं रे घेली (२)
आज सखी आनंदनी हेली...
महा रे मुनीना ध्यानमां ना'आवे (२), ते रे शामळियोजी मुजने बोलावे (२)
आज सखी आनंदनी हेली...
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे
ते रे शामळियोजी मुजने रे प्रीछे, ते रे शामळियोजी मुजने रे प्रीछे...
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे...

न गई गंगा गोदावरी काशी (२), घेर बेठा मळ्या अक्षरवासी (२)
जे सुखने भव-ब्रह्मा रे इच्छे...

तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं
सहेजे सहेजे हुं तो सुखडा रे माणुं, सहेजे सहेजे हुं तो सुखडा रे माणुं...
तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं...
जे'राम कहे स्वामी सहेजे रे मळिया (२)
वातनी वाते व्हालो अढळक ढळिया (२)
तप रे तीरथमां हुं कांई नव जाणुं...

घंटी बजाना...

पुष्पम् -

अब हम ठाकोरजी को पुष्प अर्पण करेंगे।

शतपत्रै: कर्णिकारैश्-चम्पकै र्मल्लिकादिभि:।
पुष्पै र्नाना-विधैश्चैव पूजयामि सुरेश्वरम्।।
ॐ श्री स्वामिनारायण परमात्मने नम:। पुष्पम् समर्पयामि।

घंटी बजाना...

धूपम् -

ठाकोरजी के पास धूप करके वातावरण को सुगंधित करेंगे।

दशाऽङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनो-हरम्।
गृहाण देव-देवेश मया भक्त्या समर्पितम्।।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नम:। धूपम् समर्पयामि।

घंटी बजाना...

दीपम् -

अब हम ठाकोरजी को दीप का दर्शन करायेंगे।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
संसार-तमस: पाहि नमस्ते ज्योति-रुपिणे।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नम:। दीपं दर्शयामि।

घंटी बजाना...

नैवेद्यम् -

अब हम ठाकोरजी को आपके पास रखी गई हुई सामग्री से भावपूर्वक नैवेद्य अर्पण करेंगे।

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्यभोज्य-समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडळ सहिताय नैवेद्यं समर्पयामि।

जमो थाळ जीवन जाऊं वारी
धोऊं कर-चरण करो त्यारी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

बेसो मेल्या बाजोठिया ढाळी, कटोरा कंचननी थाळी
जळे भर्या चंबु चोखाळी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

करी काठा घउंनी पोळी, मेली धृत-साकरमां बोळी
काढ्यो रस केरीनो घोळी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

गळ्या साटा घेबर फूलवडी, दूधपाक मालपूआ कढी
पूरी पोची थई छे घीमां चढी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

अथाणां शाक सुंदर भाजी, लावी छुं तरत करी ताजी
दहीं-भात साकर छे झाझी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

महाराज जमो, स्वामी जमो, गढपुर निवासी गोपीनाथदेव जमो, लक्ष्मीनारायणदेव जमो, नरनारायणदेव जमो, वडतालना हरिकृष्ण महाराज जमो, सारंगपुरना अक्षरपुरुषोत्तम महाराज जमो, गोंडलना घनश्याम महाराज जमो, गुणातीत समाजना मुक्ताक्षरपुरुषोत्तम जमो, प्रत्यक्ष धाम-धामी मुक्तो जमो, अमारा भावो जमो, भक्तोनी भावनाना थाळ जमी सौने प्रसादी आपीने सुखिया-सुखिया करो...

तमे सुदामाना तांदूळ जम्यां, विदुरनी भाजी खाधी, भक्तोना भाव ग्रहण करीने भक्तोना संकल्प पूरा करजो, सुखिया करजो, सुखिया करजो...

घंटी बजाना...

जलम् -

अब ठाकोरजी को जल अर्पण करेंगे।

चळुं करो लावुं जळ झारी, एलायची लविंग सोपारी
पान-बीडी बनावी सारी...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

मुखवास मनगमता लईने, प्रसादीनो थाळ मुने दईने
बेसो सिंहासन राजी थईने...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी....

कमरे कसीने फेंटो, राजेश्वर ओढीने रेंटो
भूमानंदना वा'लाने भेटो...
जमो थाळ जीवन जाऊं वारी.... (३)

राजोपचारा -

ठाकोरजी को छत्र अर्पण करेंगे।

छत्रं च चामरं चैव व्यंजनं दर्पणं तथा।
पादुकादीनि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर।।
श्री स्वामिनारायणाय परमात्मने नमः।

राजोपचारार्थे छत्रं समर्पयामि।
चामर युगलं समर्पयामि।
दण्डं समर्पयामि।
आदर्शकं समर्पयामि।
रत्नखचितपादुकां समर्पयामि।
वीणा-भेरी-मृदङ्ग-दुन्दुभि-प्रभृति-वाद्यानि,
नृत्यगीतं वाजिंत्रादिकं समर्पयामि। भावयामि।

घंटी बजाना...

निराजनम् -

अब हम ठाकोरजी की आरती छतारेंगे। आपके समक्ष दीया है उससे हम आरती करेंगे।

निराजनं गृहाणेश पञ्चवर्ति-समन्वितम्।
तेजो-राशि र्मया दत्तो लोकानन्द-कर प्रभो ।।
श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडळ सहिताय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु जय अंतरयामी
सहजानंद दयाळु (२), बळवंत बहुनामी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

चरण सरोज तमारां वंदु कर जोडी, प्रभु वंदु कर जोडी
चरणे चित्त धर्याथी (२), दु:ख नाख्यां तोडी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

नारायण सुखदाता द्विजकुळ तनुधारी, प्रभु द्विजकुळ तनुधारी
पामर पतित उद्धार्या (२), अगणित नर-नारी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

नित्य नित्य नौतम लीला करता अविनाशी, प्रभु करता अविनाशी
अडसठ तीरथ चरणे (२), कोटि गया काशी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे, प्रभु जे दर्शन करशे
काळ-कर्मथी छूटी (२), कुटुंब सहित तरशे...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

आ अवसर करुणानिधि करुणा बहु कीधी, व्हाले करुणा बहु कीधी
मुक्तानंद कहे मुक्ति (२), सुगम करी सीधी...
ॐ जय सद्गुरु स्वामी...

कर्पूर-गौरं करुणाऽवतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयाऽरविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।। (३)

(स्वामिनारायण... मंत्रजाप)

सहजानंदस्वामि महाराजनी जय।

घंटी बजाना...

प्रदक्षिणा -

अब हम ठाकोरजी की प्रदक्षिणा की भावना करेंगे।

पदे पदे या परिपूजकेभ्य: सद्योऽश्वमेधस्य फलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणान्ते परिकल्पयामि।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा-पदेपदे।।

श्री स्वामिनारायण परमात्माने नम:। प्रदक्षिणां परिकल्पयामि।

(स्वामिनारायण... मंत्रजाप)

घंटी बजाना...

मंत्रपुष्पांजलि -

अब हम दाहिने हाथ में पुष्प रखेंगे और मंत्रपुष्पांजलि होगी।

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटलाब्जै:
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पै:।
कुन्द-प्रवाल-तुलसी-दल-मालतीभिस्
त्वां पूजयामि जगदीश्वर लोकनाथ ।।

हरि ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा, स्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम्महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नम:।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं, भौज्यं, स्वाराज्यं, वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं,
राज्यं, महाराज्यम्, आधिपत्यमयं, समन्तपर्यायी, स्यात् सार्वभौम:,
सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्र-पर्यन्तायाऽएकाहिति ।।
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो, मरुत: परिवेष्टारो, मरुत्तस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रे र्विश्वे देवा: सभासद इति ।।

हरि: ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो, विश्वतो बाहुरत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रै र्द्यावा, भूमी जनयन्देवऽएक:।।

ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमही। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ सहजानन्दाय विद्महे। साक्षाराय च धीमही। तन्नः स्वामी प्रचोदयात्।
ॐ घनश्यामाय विद्महे। नीलकण्ठाय धीमही। तन्नो हरिः प्रचोदयात्।
ॐ श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडलसहिताय इमं मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

अब हाथ में रखे हुए पुष्प ठाकोरजी को अर्पण करेंगे।

घंटी बजाना...

अथः नामस्टनम् -

स्वामिश्रीजी की मर्ज़ी और एकांतिकों की आज्ञा अनुसार अब धून्य करते है। यह महापूजा साक्षात् अक्षरधाम की हो रही है। जिसमें श्रीजी महाराज, अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी और सभी दिव्य मुक्त, दिव्य स्वरुप बिराजमान है और सभी भक्तों की प्रार्थना सुनते है और शुभ एवम् सत्य संकल्प सिद्ध करते है ऐसी प्र.ब्र.स्व.प.पू. योगीजी महाराज की केवल दया, करुणा और दृष्टि से ही होता है। जिनकी एक शरत निर्दोषबुद्धि की है। इसलिये ऐसे भक्त अति सच्चे भाव से महापूजा करे-कराये उनके सभी मनोरथ पूर्ण हो ऐसी साक्षात् प्रगट भगवान को इस महापूजा में प्रार्थना है।

काकाजी एवम् पप्पाजी की शताब्दी के महोत्सव के उपलक्ष्य में यह महापूजा के फलस्वरुप समग्र सत्संग मंडल में संप-सुहृदभाव-एकता के पूर बहे और हम सब मिलके सुहृदभाव से गुणातीत भावना को प्रगटाये और अखंड रखें ऐसी प्रार्थना करते है।

(स्वामिनारायण... मंत्रजाप)

आवो सौ भेगां मळीने सुहृदभावे चालो, गुणातीत भावना प्रगटावीऐ (२)
परम पूज्य श्री काकाजीनो, परम पूज्य श्री पप्पाजीनो
बंधुबेलडी शताब्दी महोत्सव मनावीऐ, गुणातीत भावना प्रगटावीऐ...
आवो सौ भेगां मळीने सुहृदभावे चालो, गुणातीत भावना प्रगटावीऐ (२)

एक शरत निर्दोषबुद्धिनी स्वामीजीऐ आपी,
कुसंगीनोय अवगुण कोई लेशो नहीं कदापि (२)

धाम–धामी ने मुक्तो सदा, साकार दिव्य मनाय (२)
गमे मुक्तोनां क्रिया–स्वभाव तो स्वभाव रहित थवाय...
गुणातीत भावना प्रगटावीऐ...

आवो सौ भेगां मळीने सुहृदभावे चालो, गुणातीत भावना प्रगटावीऐ...

घंटी बजाना...

प्रार्थना -

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-फल-प्राप्ति-अर्थम्
सर्व-अभिलाष-सिद्धि-अर्थम्
शरीरे गृहे वा दोष-रोग-क्लेश-भय-उच्चाट-आदि-व्याधि-विनाश-अर्थम्
दशविध-फल-लक्ष्मी-प्राप्ति-अर्थम्

श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराजस्य महापूजा विधेः यन्-न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वम् भक्तानां
श्री गुरुवर्याणाम् वचनात् तथा च संतवर्याणाम्
तथा च ब्राह्मणानाम् वचनात् सर्वम् परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णः।

घंटी बजाना...

क्षमापनम् -

क्षमा याचना – हे प्रभु, हम आपके अबुध बालक है। आपके आवाहन, पूजन एवम् विसर्जन में कोई क्षति हुई हो तो हमें उदार दिल से क्षमा करना। हम सिर्फ आपके ही शरण में है तो हमारी रक्षा करना।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।

अन्यथा शरणम् नास्ति त्वमेव शरणम् मम्।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष त्वम् पुरुषोत्तमम् ।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियै र्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ।।

घंटी बजाना...

विसर्जनम् -

स्वस्थानं गच्छ देवेश पूजाम् आदाय मामकीम्।
इष्ट-काम-प्रसिद्धयर्थं प्रत्यक्षो भव सर्वदा ।।

घंटी बजाना...

चरणामृत मंत्र -

अकाल-मृत्यु-हरणं सर्व-व्याधि-विनाशनम्।
हरे: पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।।

सर्वेऽत्र सुखिन: सन्तु सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खमाप्नुयात् ।।

साक्षात् अक्षर दिव्यधाम स्वरुपम् सत्यम् परम् धिमहि।
ध्यानाद् यस्य भवन्ति तद्भपूजना: शिघ्रम् प्रसादात् हरे:।।

यो भूमौ भ्रमत: करोत्यविरत: प्रेम्णा हरे वै कथाम्।
स श्री ज्ञानजी योगीराज सुभग: कुर्यात् सदा मंगलम्।
कुर्यात् सदा मंगलम्। कुर्यात् सदा मंगलम्।।

श्रीपतिं श्रीधरं सर्वदेवैश्वरं, भक्ति धर्मात्मजं वासुदेवं हरे,
माधवं-केशवं-कामदं-कारणं, स्वामिनारायणं नीलकंठं भजे।
श्रीपतिं श्रीधरं...

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

काकाजी - पप्पाजी बंधुबेलडी शताब्दी महोत्सव की जय जय जय।

भगवान सब का भला करो। भला करो भगवान सब का भला करो।

शुभम् भवतु, मंगलम् भवतु।

जनमंगल नामावलि -

ॐ श्री कृष्णाय नमः।
ॐ श्री वासुदेवाय नमः।
ॐ श्री नरनारायणाय नमः।
ॐ श्री प्रभवे नमः।
ॐ श्री भक्तिधर्मात्मजाय नमः।
ॐ श्री अजन्मने नमः।
ॐ श्री कृष्णाय नमः।
ॐ श्री नारायणाय नमः।
ॐ श्री हरये नमः।
ॐ श्री हरिकृष्णाय नमः।
ॐ श्री घनश्यामाय नमः।
ॐ श्री धार्मिकाय नमः।
ॐ श्री भक्तिनन्दनाय नमः।
ॐ श्री बृहद्व्रतधराय नमः।
ॐ श्री शुद्धाय नमः।
ॐ श्री राधाकृष्णेष्टदैवताय नमः।
ॐ श्री मरुत्सुतप्रियाय नमः।
ॐ श्री कालीभैरवाद्यतिभीषणाय नमः।
ॐ श्री जितेन्द्रियाय नमः।
ॐ श्री जिताहाराय नमः।
ॐ श्री तीव्रवैराग्याय नमः।
ॐ श्री आस्तिकाय नमः।
ॐ श्री योगेश्वराय नमः।
ॐ श्री योगकलाप्रवृत्तये नमः।
ॐ श्री अतिधैर्यवते नमः।
ॐ श्री ज्ञानिने नमः।
ॐ श्री परमहंसाय नमः।
ॐ श्री तीर्थकृते नमः।
ॐ श्री तैर्थिकार्चिताय नमः।
ॐ श्री क्षमानिधये नमः।
ॐ श्री सदोन्निद्राय नमः।
ॐ श्री ध्याननिष्ठाय नमः।
ॐ श्री तपःप्रियाय नमः।
ॐ श्री सिद्धेश्वराय नमः।
ॐ श्री स्वतन्त्राय नमः।
ॐ श्री ब्रह्मविद्याप्रवर्तकाय नमः।
ॐ श्री पाषण्डोच्छेदनपटवे नमः।
ॐ श्री स्व-स्वरुपाचलस्थितये नमः।
ॐ श्री प्रशान्तमूर्तये नमः।
ॐ श्री निर्दोषाय नमः।
ॐ श्री असुरगुर्वादिमोहनाय नमः।
ॐ श्री अतिकारुण्यनयनाय नमः।
ॐ श्री उद्धवाध्वप्रवर्तकाय नमः।
ॐ श्री महाव्रताय नमः।
ॐ श्री साधुशीलाय नमः।
ॐ श्री साधुविप्र-प्रपूजकाय नमः।
ॐ श्री अहिंसयज्ञप्रस्तोत्रे नमः।
ॐ श्री साकारब्रह्मवर्णनाय नमः।
ॐ श्री स्वामिनारायणाय नमः।
ॐ श्री स्वामिने नमः।
ॐ श्री कालदोषनिवारकाय नमः।
ॐ श्री सच्छास्त्रव्यसनाय नमः।
ॐ श्री सद्यःसमाधिस्थितिकारकाय नमः।
ॐ श्री कृष्णार्चास्थापनकराय नमः।
ॐ श्री कौलद्विषे नमः।
ॐ श्री कलितारकाय नमः।

जनमंगल नामावलि -

ॐ श्री प्रकाशरुपाय नमः।
ॐ श्री निर्दम्भाय नमः।
ॐ श्री सर्वजीवहितावहाय नमः।
ॐ श्री भक्तिसम्पोषकाय नमः।
ॐ श्री वाग्मिने नमः।
ॐ श्री चतुर्वर्गफलप्रदाय नमः।
ॐ श्री निर्मत्सराय नमः।
ॐ श्री भक्तवर्मणे नमः।
ॐ श्री बुद्धिदात्रे नमः।
ॐ श्री अतिपावनाय नमः।
ॐ श्री अबुद्धिहृते नमः।
ॐ श्री ब्रह्मधामदर्शकाय नमः।
ॐ श्री अपराजिताय नमः।
ॐ श्री आसमुद्रान्तसत्कीर्तये नमः।
ॐ श्री श्रितसंसृतिमोचनाय नमः।
ॐ श्री उदाराय नमः।
ॐ श्री सहजानन्दाय नमः।
ॐ श्री साध्वीधर्मप्रवर्तकाय नमः।
ॐ श्री कन्दर्पदर्पदलनाय नमः।
ॐ श्री वैष्णवक्रतुकारकाय नमः।
ॐ श्री पञ्चायतनसम्मानाय नमः।
ॐ श्री नैष्ठिकव्रतपोषकाय नमः।
ॐ श्री प्रगल्भाय नमः।
ॐ श्री निःस्पृहाय नमः।
ॐ श्री सत्यप्रतिज्ञाय नमः।
ॐ श्री भक्तवत्सलाय नमः।
ॐ श्री अरोषणाय नमः।
ॐ श्री दीर्घदर्शिने नमः।
ॐ श्री षड्मिविजयक्षमाय नमः।
ॐ श्री निरहङ्कृतये नमः।
ॐ श्री अद्रोहाय नमः।
ॐ श्री ऋजवे नमः।
ॐ श्री सर्वोपकारकाय नमः।
ॐ श्री नियामकाय नमः।
ॐ श्री उपशमस्थितये नमः।
ॐ श्री विनयवते नमः।
ॐ श्री गुरवे नमः।
ॐ श्री अजातवैरिणे नमः।
ॐ श्री निर्लोभाय नमः।
ॐ श्री महापुरुषाय नमः।
ॐ श्री आत्मदाय नमः।
ॐ श्री अखण्डितार्षमर्यादाय नमः।
ॐ श्री व्याससिद्धान्तबोधकाय नमः।
ॐ श्री मनोनिग्रहयुक्तिज्ञाय नमः।
ॐ श्री यमदूतविमोचकाय नमः।
ॐ श्री पूर्णकामाय नमः।
ॐ श्री सत्यवादिने नमः।
ॐ श्री गुणग्राहिणे नमः।
ॐ श्री गतस्मयाय नमः।
ॐ श्री सदाचारप्रियतराय नमः।
ॐ श्री पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः।
ॐ श्री सर्वमङ्गलसद्रूपनाना
गुणविचेष्टिाय नमः।

Centennial
Celebrations
100
YEARS
CHICAGO
Let Us Attain Gunatit Devotion Together
10-12 June 2016